16. दादी जी के महावाक्य

हमें बाबा ने कहा, तुम हो विश्वकल्याणी और हम कहें, हमने तो फलाने संस्कार का त्याग नहीं किया है। अपने संस्कार का ही उद्धार नहीं किया तो दूसरे का क्या करूँगी? बाबा ने कहा, तुम उद्धारमूर्त हो। उद्धार माना ही हमारे में कोई पुरानी वृत्ति–दृष्टि न हो। तो मैंने संस्कारों का उद्धार किया?

जब कोई कहता यह पुराना संस्कार है तो मन में आता, यह भाषा हमारी समाप्त कब होगी? हम कभी वर्णन करेंगे क्या कि श्रीकृष्ण का यह संस्कार है। संस्कार शब्द अपनी डिक्शनरी का नहीं। तो पहले हम संस्कार शब्द का ही त्याग करें। कोई कहता इनका तो पुराना कड़ा संस्कार है, यह तो मेरी इन्सल्ट हुई, ग्लानि हुई। मेरे में कोई भी संस्कार की आदत है तो मैं आदत के वश हुई। आदत मेरे वश कब होगी? आदत वश में हो गयी माना संस्कार परिवर्तन हो गये। संस्कार परिवर्तन माना संकल्प–विकल्प खत्म।

संस्कार के वश हैं तो उनकी बुद्धि के अन्दर अनेकानेक व्यर्थ संकल्प चलते हैं, संकल्प व्यर्थ हैं तो शक्ति की वेस्टेज है। शक्ति वेस्ट करते तो वरदानों से झोली खाली हो जाती।

बाबा कहते, तुम किसी के पास जाओ, यह ज्ञान तुम्हें कोई दे नहीं सकता। हमारे सामने कितने भी पढ़े–लिखे हों कुछ भी नहीं हैं। हम सिर्फ अल्फ बे पढ़े हैं लेकिन उनसे महान् हैं क्योंकि उन्हें वरदाता का वरदान नहीं है। वे कोई देवताई संस्कार में परिवर्तन नहीं हो रहे हैं। वह कर्मातीत नहीं बन रहे हैं। हम बच्चों को सबकुछ मिलता, उन्हें कुछ भी नहीं। जब हमें ही वरदान मिल रहे हैं तो हम अपने संकल्प को व्यर्थ क्यों करते?

बाबा घड़ी–घड़ी कहता, बच्चे संकल्प व्यर्थ नहीं गँवओ तो मैं क्यों गँवऊँ? उस खर्चे का पिंच होता परन्तु अपने संकल्प व्यर्थ करते उसका सोच नहीं चलता? पैसे का सोच होता लेकिन मैं बाबा की मिली हुई शक्ति व्यर्थ करता उसका शॉक नहीं आता?

ओम् शांति।